# 12 मई, 2010 को 1130 बजे विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार वितरण समारोह, 2010' में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

फ्लोरेंस नाइटिंगेल की जयन्ती और अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर आयोजित आज के समारोह में उपस्थित होकर नर्सिंग क्षेत्र के उत्कृष्ट कार्मिकों को राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार प्रदान करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। मैं इस अवसर पर सभी पुरस्कार विजेताओं तथा उनके परिवारों को हार्दिक बधाई भी देता हूं और उनके कठिन परिश्रम तथा अपने मरीज़ों एवं लोक स्वास्थ्य सेवा के लिए उनकी पेशेवर प्रतिबद्धता के प्रति राष्ट्र की हार्दिक सराहना करता हूं।

एक अरब से अधिक की आबादी वाले विकासशील देश के रूप में हम बृहद सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं; मानव विकास के क्षेत्र की चुनौतियां और भी जटिल हैं। हमें सहस्राब्दी विकास के लक्ष्यों को हासिल करना है और संचारी रोगों, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा तथा शहरी तथा ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य-सेवा नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण से संबंधित अधूरे कार्यक्रमों को पूरा करना है। त्वरित आर्थिक विकास का आशय स्वास्थ्य संबंधी विशेषताओं में परिवर्तन के मुद्दों यथा ऐसी अंसचारी बीमारियों के असामयिक बोझ से संबंधित मुद्दों का समाधान करना भी रहा है जो एक प्रमुख लोक स्वास्थ्य समस्या के तौर पर उभरी हैं और जो 30-60 के आयु वर्ग में होने वाली समस्त मौतों में से लगभग आधी के लिए जिम्मेदार हैं।

नर्सिंग एक सक्षम, सस्ती और व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को स्थापित करने तथा निष्पक्ष रीति से स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है। इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस की विषय-वस्तु--उत्तम सेवा प्रदान करना, समुदायों की सेवा करना: नर्सें चिरकालिक देखभाल में अग्रणी--उचित है क्योंकि मृत्यु एवं अपंगता में बेतहाशा वृद्धि हुई है जोकि पुरानी बीमारियों के परिणाम हैं। आम धारणा कि पुरानी बीमारियां विकसित देशों की समस्या हैं के विपरीत विश्व में पुरानी बीमारियों के कारण होने वाली 80 प्रतिशत मौतें निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि गरीब और कमजोर वर्ग के लोगों को ही देशों के बीच और किसी देश के भीतर स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्रों में बढ़ते अंतर के कारण पुरानी बीमारियों के बढ़ते बोझ को ज्यादातर वहन करना पड़ता है।

वैश्विक स्तर पर पुरानी बीमारियों के मामलों की भारी भरकम तादाद का विशाल हिस्सा भारत वहन करता है। उदाहरणस्वरूप, विश्व स्तर पर मधुमेह से पीड़ित 246 मिलियन लोगों में से सर्वाधिक संख्या अर्थात् 41 मिलियन लोग भारत में हैं। हृदय रोगों, कैंसर और श्वास संबंधी पुराने रोगों के मामले में स्थिति लगभग वैसी ही है। इन रोगों की रोकथाम की जा सकती है और इनसे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, समुदायों और परिवारों का अपार नुकसान होता है।

नर्सिंग कर्मियों को इस विशाल स्वास्थ्य चुनौती को समझना चाहिए और स्वस्थ्य जीवन शैली को बढ़ावा देने, रोगों की रोकथाम करने और जरूरतमंदों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए समन्वित कार्य करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय नर्स परिषद् ने इस वर्ष विश्व की 13 मिलियन नर्सों में से प्रत्येक नर्स से यह आह्वान किया है कि वे "अपने परिवारों, मित्रों, कार्य स्थलों और स्थानीय समुदायों के बीच

स्वस्थ जीवन शैली के संवर्धन..... पुरानी बीमारियों की रोकथाम के लिए अनुकरणीय आदर्श (रोल मॉडल), प्रशिक्षक और परिवर्तन लाने के लिए जिम्मेदार एजेंट" के रूप में कार्य करें। मैं हर एक से अनुरोध करता हूं कि इस आह्वान पर ध्यान दें।

देवियो और सज्जनो

नर्सिंगकर्मियों की अत्यधिक कमी हमारे जन स्वास्थ्य सेवा संबंधी उद्देश्यों को हासिल करने में एक बड़ी बाधा है। भारत में प्रति दस हजार की आबादी पर केवल 8 नर्सें हैं, और इसकी तुलना में श्रीलंका में 14, इंडोनेशिया में 13, थाइलैंड में 37 और मालदीव में 33 हैं। हमारे यहां नर्स एवं आबादी का अनुपात 1:1100 है जबकि इसकी तुलना में विकसित देश में यह अनुपात 1:150 है। यह अनुमान भी लगाया जाता है कि 10.35 लाख पंजीकृत नर्सों में से देश में इस पेशे में काम करने वाली सक्रिय नर्सों की संख्या मात्र चार लाख के करीब है। यह भी विसंगति है कि देश में नर्सों की तुलना में डॉक्टरों की संख्या अधिक है और प्रति 3 डॉक्टरों पर 2 नर्सें हैं। तुलनात्मक रूप से, अधिकतर विकसित देशों में प्रति डॉक्टर पर तीन नर्सें हैं।

देश में नर्सिंग शैक्षिक संस्थानों की अवस्थिति तथा नर्सिंग कार्मिकों की उपलब्धता के मामले में भी गम्भीर क्षेत्रीय असमानताएं हैं। 60 प्रतिशत से भी अधिक शैक्षिक संस्थान दक्षिणी एवं पश्चिमी भारत में हैं जबकि नर्सिंग कार्मिकों की संख्या में सर्वाधिक कमी उत्तरी तथा पूर्वी भारत के अति महत्वपूर्ण राज्यों में है। हमारे यहाँ लगभग 10 लाख नर्सों की भारी कमी है जिन्हें समयबद्ध तरीके से प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है ताकि इस कमी को पूरा किया जा सके और भोरे समिति की सिफारिश के अनुसार नर्सों और जनता के 1:500 के अपेक्षित अनुपात को प्राप्त किया जा सके।

एक भिन्न दृष्टिकोण के अनुसार, इस बात को अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि नर्सिंग को हमारे देश के अनेक हिस्सों में एक आकर्षक व्यावसायिक विकल्प के रूप में नहीं देखा जाता। यह हमें इसके सम्भावित सांस्कृतिक तथा सामाजिक कारणों का आत्मविश्लेषण करने के लिए बाध्य करता है।

सरकार स्वास्थ्य देखरेख के लिए संसाधनों में वृद्धि करने तथा सेवा प्रदान किए जाने के क्षेत्र में सुधार तथा समन्वय लाने के लिए प्रतिबद्ध बनी हुई है। माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री के प्रयासों से ग्यारहवीं योजनावधि के दौरान प्रचुर धनराशि का आवंटन किया गया है जिसमें नर्सिंग कार्मिकों की समग्र उपलब्धता को बढ़ाने तथा उनके लिए कौशल वर्धन पर जोर दिया गया है।

जबकि हम अपने नागरिकों तथा विदेशियों के लिए अत्यन्त समुन्नत निजी स्वास्थ्य देखभाल की उपलब्धता के मामले में उत्तम नर्सिंग देखभाल की भूमिका को महसूस करते हैं, प्राय: इस बात को भुला दिया जाता है कि सहायक दाइयों और लेडी हेल्थ विजिटर्स सहित सामान्य नर्सिंग एवं दाइयाँ ही हमारे नागरिकों के दरवाजे तक निवारक, संवर्धनकारी और पुनर्वासकारी प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने का माध्यम बनी हैं। वे ही ग्रामीण भारत के सुदूर क्षेत्रों में लोक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करती हैं और समुदाय को महत्वपूर्ण मातृ तथा बाल स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराती हैं।

अपने समुदायों तथा समाज में अनुकरणीय आदर्श बनने के लिए आज के पुरस्कार विजेताओं को मैं एक बार पुन: बधाई देता हूँ। मैं श्री गुलाम नबी आज़ाद साहब का आभारी हूँ कि उन्होंने आज मुझे इस समारोह में आमंत्रित किया।

*********